NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

छायावादोत्तर हिंदी कविता

B.H.D.C.-105

B.A. Hindi (Hons.) - 3rd Semester

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Anjana Mehrish,* M.A., M.Phil. (Hindi)

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.*
4. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
5. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
6. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
7. *The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*
8. *All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.*
9. *All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.*

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

Content

छायावादोत्तर हिंदी कविता

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper–Exam Held in July-2022 (Solved) 1-2
Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2
Sample Question Paper–1 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. प्रगतिवाद : स्वरूप और विकास 1
2. प्रयोगवाद और नयी कविता : स्वरूप और विकास 8
3. समकालीन कविता : स्वरूप और विकास 18
4. केदारनाथ अग्रवाल 29
5. नागार्जुन 36
6. रामधारी सिंह 'दिनकर' 43
7. माखनलाल चतुर्वेदी 48
8. अज्ञेय 55
9. भवानी प्रसाद मिश्र 66

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
10.	रघुवीर सहाय	74
11.	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	81
12.	केदारनाथ सिंह	90
13.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : केदारनाथ अग्रवाल	98
14.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : नागार्जुन	104
15.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : रामधारी सिंह 'दिनकर'	109
16.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : माखनलाल चतुर्वेदी	116
17.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' और भवानी प्रसाद मिश्र	121
18.	काव्य वाचन एवं विश्लेषण : रघुवीर सहाय और सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	141
19.	काव्य वाचन और विश्लेषण : केदारनाथ सिंह	155

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

छायावादोत्तर हिंदी कविता

B.H.D.C.-105

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। पहला प्रश्न अनिवार्य है।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं *तीन* की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(क) माँझी! न बजाओ बंशी मेरा मन डोलता
मेरा मन डोलता है जैसे जल डोलता
जल का जहाज जैसे पल-पल डोलता
माँझी! न बजाओ बंशी मेरा प्रन टूटता
मेरा प्रन टूटता है जैसे तृन टूटता
तृन का निवास जैसे बन-बन टूटा
माँझी! न बजाओ बंशी मेरा तन झूमता
मेरा तन झूमता है तेरा तन झूमता
मेरा तन तेरा तन एक बन झूमता।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-98, 'व्याख्या 1'

(ख) आदमी का स्वप्न? है बुलबुला जल काय
आज उठता और कल फिर फूट जाता हाय
किन्तु, फिर भी धन्य ठहरा आदमी ही तो?
बुलबुलों से खेलता, कविता बनाता है।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत पंक्तियां रामधारी सिंह 'दिनकर' रचित कविता 'रात यों कहने लगा मुझसे गगन का चांद' शीर्षक कविता से उद्धृत हैं। इस कविता में कवि ने चाँद और कवि की बातचीत के माध्यम से यह बताने की कोशिश की गयी है कि मनुष्य अब साधन-सम्पन्न हो गया है। विज्ञान की ताकत ने उसके इरादों को खतरनाक बना दिया है।

व्याख्या–भावनाओं के ज्वार में मनुष्य को मैंने तुम्हारी तरह कवि बनते भी देखा है। ऐसा मैंने लाखों बार देखा है। मुझे कई बार लगा कि तुम्हारी तरह जो लोग कवि होते हैं, वे प्राय: पागल होते हैं। मुझे यही लगा कि ये कवि चाँदनी में बैठकर अपने सपनों को हकीकत में बदलने की कल्पना करते हैं, मगर यह सब मानसिक विक्षोभ से ज्यादा कुछ नहीं है। मनुष्य के सपने पानी के बुलबुले की तरह बनते और बिगड़ते हैं। लेकिन आदमी सपने देखना छोड़ता नहीं है। वह इन सपनों से ही खेलता रहता है और कवि के रूप में अपनी वाणी को कविता में ढाल देता है।

विशेष–1. विज्ञान के विकास से होते ध्वंस की ओर संकेत है।

2. अत्यधिक अनियंत्रित विकास से पृथ्वी का विनाश हो रहा है।

3. नया मनुष्य प्रकृति में विनाशकारी हस्तक्षेप भी कर रहा है।

4. भाषा बोलचाल की और संवादात्मक है।

(ग) अगर मैं तुमको
ललाती साँझ के नभ की अकेली तारिका
अब नहीं कहता,
या शरद के भोर की नीहार-न्हायी कूँई
टटकी कली चंपे की
वगैरह, तो
नहीं कारण कि मेरा हृदय उथला या कि सूना है
या कि मेरा प्यार मैला है।
बल्कि केवल यही :
ये उपमान मैले हो गए हैं।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-17, पृष्ठ-124, 'व्याख्या 1'

(घ) तुम्हारे साथ रहकर
अक्सर मुझे महसूस हुआ है
कि हर बात का एक मतलब होता है,
यहाँ तक कि घास के हिलने का भी,
हवा का खिड़की से आने का,
और धूप का दीवार पर
चढ़कर चले जाने का।
तुम्हारे साथ रहकर
अक्सर मुझे लगा है
कि हम असमर्थताओं से नहीं
सम्भावनाओं से घिरे हैं,
हर दीवार में द्वार बन सकता है
और हर द्वार से पूरा का पूरा
पहाड़ गुजर सकता है।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-145, 'व्याख्या 3', पृष्ठ-146, 'व्याख्या 4'

www.neerajbooks.com

(ङ) यह धीरे-धीरे होना
धीरे-धीरे होने की सामूहिक लय
दृढ़ता से बाँधे है समूचे शहर को
इस तरह कि कुछ भी गिरता नहीं है
कि हिलता नहीं है कुछ भी
कि जो चीज जहाँ थी
वहीं पर रखी है
कि गंगा वहीं है
कि वहीं पर बँधी है नाँव
कि वहीं पर रखी है तुलसीदास की खड़ाऊँ
सैकड़ों बरस से।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-158, 'व्याख्या 3'

प्रश्न 2. प्रयोगवाद की प्रमुख प्रवृत्तियों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-15, प्रश्न 1

प्रश्न 3. समकालीन कविता की शिल्पगत प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-20, 'समकालीन कविता की शिल्पगत प्रवृत्तियां'

प्रश्न 4. केदारनाथ अग्रवाल के काव्य की अन्तर्वस्तु पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-30, 'केदारनाथ अग्रवाल के काव्य की अंतर्वस्तु'

प्रश्न 5. नागार्जुन के काव्य-सौष्ठव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-37, 'नागार्जुन के काव्य की अंतर्वस्तु', पृष्ठ-38, 'संरचना शिल्प', पृष्ठ-40, प्रश्न 11

प्रश्न 6. 'दिनकर' की सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-44, 'दिनकर साहित्य : प्रमुख प्रवृत्तियां'

प्रश्न 7. माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य के भावपक्ष को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-49, 'चतुर्वेदी जी के काव्य का भावपक्ष', पृष्ठ-53, प्रश्न 4

प्रश्न 8. अज्ञेय के काव्य के शिल्पपक्ष का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-57, 'अभिव्यंजना-शिल्प का सौंदर्य'

प्रश्न 9. एक कवि के रूप में रघुवीर सहाय का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-76, प्रश्न 3, पृष्ठ-78, प्रश्न 2, प्रश्न 3

10. केदारनाथ सिंह के काव्य की प्रमुख विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-90, 'आमजन के संघर्ष को वाणी', पृष्ठ-91, 'उम्मीद के कवि', पृष्ठ-92, 'मातृभाषाओं की पक्षधरता', 'भाषा और काव्यात्मकता'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

छायावादोत्तर हिंदी कविता

प्रगतिवाद : स्वरूप और विकास

1

परिचय

1936 ई. के बाद हिंदी साहित्य में सामाजिक चेतना को केंद्र में रखने वाली जिस नई काव्यधारा का उदय हुआ, उसे प्रगतिवाद कहते हैं। प्रगतिवाद एक साहित्यिक आंदोलन तो है, किंतु सभी वाद आंदोलन के रूप में विकसित नहीं होते; जैसे–'छायावाद' एक व्यापक साहित्य प्रवृत्ति है, तो 'प्रयोगवाद' एक काव्य प्रवृत्ति, किंतु प्रगतिवाद एक साहित्यिक आंदोलन के रूप में ही विकसित हुआ। अत: उसे कथा साहित्य, काव्य, आलोचना अर्थात समस्त साहित्यिक विधाओं में अभिव्यक्ति मिली है। प्रगतिवाद को मार्क्सवादी विचारधारा का साहित्यिक रूपांतरण भी माना जाता है।

अध्याय का विहंगावलोकन

प्रगतिवाद : पृष्ठभूमि

किसी भी आंदोलन की पृष्ठभूमि में उस युग की परिस्थितियों की विशिष्ट भूमिका होती है। फिर चाहे वह सामाजिक, राजनैतिक या आर्थिक परिस्थितियाँ हों या साहित्यिक; सभी मिलकर किसी आंदोलन को उसकी स्पष्ट रूपरेखा प्रदान करती हैं। प्रगतिवाद की पृष्ठभूमि में भी ये परिस्थितियाँ विविध रूपों में विद्यमान रही हैं।

युगीन परिस्थितियाँ

प्रगतिवाद का उदय सन् 1930 के बाद हुआ। इस काव्यधारा के उद्भव और विकास में अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ, जैसे–रूसी क्रांति के बाद हुई सोवियत संघ की स्थापना, वैश्विक स्तर पर प्रगतिशील लेखक संघों का निर्माण आदि भी सहायक हुई। भारत में भी स्वतंत्रता आंदोलन मजबूत हो रहा था। 1930 तक राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस में वामपंथी दल कायम हो चुका था। किसान, मजदूर आंदोलन एकजुट होकर शक्तिशाली बन रहे थे। सविनय अवज्ञा आंदोलन, लगान बंदी आंदोलन, किसान सभा की स्थापना आदि भारतीय समाज में हो रहे सक्रिय बदलाव को सूचित कर रहे थे। रूस में सर्वहारा जन के जीवन का उत्थान और साम्यवाद का पश्चिम के अन्य देशों में फैलाव भारतीय बुद्धिजीवियों के लिए प्रेरणास्रोत बन रहा था। इन्हीं युगीन परिस्थितियों के कारण वर्ग-चेतना और वर्ग-संघर्ष की भावना पैदा हुई और यही भावना प्रगतिवाद की यथार्थ दृष्टि का प्रेरक तत्व बनी तथा साहित्य प्रगतिवाद के विकास का आधार भी बन गई।

साहित्यिक पृष्ठभूमि

कोई भी साहित्यिक आंदोलन या साहित्यिक प्रवृत्ति एकाएक प्रकट नहीं होती, उसके लक्षण पहले से चली आ रही साहित्यिक धाराओं में प्रकट होने लगते हैं। इसी प्रकार प्रगतिवाद से पहले छायावाद में सामाजिक यथार्थ की चेतना प्रत्यक्ष रूप से अभिव्यक्त होने लगी थी। छायावाद ने अपने स्तर पर साहित्य के विविध क्षेत्रों में गरिमापूर्ण कार्य किया। सांकेतिकता, कल्पना, भाषा के धरातल पर काव्य को गरिमा प्रदान करने के साथ-साथ व्यक्ति के भीतरी संसार को तथा उसके अस्तित्व के प्रश्न को भी काव्य का विषय बनाया, किंतु व्यक्ति के सामाजिक यथार्थ को वह साहित्य का विषय नहीं बना सका। छायावाद धीरे-धीरे सूक्ष्मता की ओर बढ़ते-बढ़ते दुर्बोध होने लगा था, तब बहुत से छायावादी कवियों ने ही कविता की अन्तर्वस्तु और रचना विधान में परिवर्तन करके एवं रूमानी वृत्ति का त्याग करके प्रगतिवाद का रास्ता तैयार किया। 1921 में निराला द्वारा रचित कविता–'जब कड़ी मारे पड़ी, दिल हिल उठा' में यथार्थपरक सामाजिक उत्तरदायित्व दिखाई देने लगा था। 'ग्राम्या', 'युगवाणी' के पीछे नये यथार्थ की चेतना स्पष्ट दिखाई देती है। 'कुकुरमुत्ता' और 'नये पत्ते' में निराला ने प्रगतिवादी काव्यदृष्टि को दृढ़ आधार प्रदान किया।

'प्रगतिवाद' शब्द का प्रयोग और अर्थ

'प्रगतिवाद' शब्द से अभिप्राय उस साहित्यिक प्रवृत्ति से है, जिसमें एक प्रकार की इतिहास चेतना, सामाजिक यथार्थ दृष्टि, वर्ग चेतन विचारधारा, प्रतिबद्धता अथवा पक्षधरता, गहरी जीवनासक्ति, परिवर्तन के लिए सजगता तथा भविष्योन्मुखी दृष्टि मौजूद हो। रूप के स्तर पर प्रगतिवाद एक सीधी, सहज-तेज-प्रखर, कभी व्यंग्यपूर्ण आक्रामक काव्यशैली का वाचक है।

प्रगतिवाद और प्रगतिशील साहित्य को कुछ विद्वान अलग-अलग मानते हैं। इनका मानना है कि प्रगतिशील शब्द अधिक व्यापक रूप में मानवीय सरोकार से जुड़ता है, जबकि प्रगतिवाद शब्द केवल उस साहित्य का बोध कराता है, जो मार्क्सवादी विचारधारा से प्रेरित है। किंतु यह अंतर सिर्फ ऊपरी स्वर या शाब्दिक स्तर पर माना जा सकता है। प्रगतिशील साहित्य अंग्रेजी के 'प्रोग्रेसिव लिटरेचर' का अनुवाद है। अंग्रेजी में इस शब्द का प्रयोग 1935 ई. के आसपास पेरिस में 'प्रोग्रेसिव राइटर्स ऐसोसिएशन' नामक संस्था के पहले अधिवेशन में हुआ। भारत में इसके एक वर्ष बाद ही 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ बना, जिसके अध्यक्ष प्रेमचंद थे।

प्रगतिशील : सीमा और व्याप्ति–एक साहित्यिक आंदोलन के रूप में प्रगतिवाद का इतिहास 1936 ई. से शुरू होकर लगभग उसके बाद के बीस वर्षों का इतिहास है। प्रगतिवाद का विरोध करने वाले उसको मार्क्सवाद का साहित्यिक रूपांतर मात्र कहकर सीमित करने का प्रयास करते रहे हैं, किंतु व्यापक अर्थों में प्रगतिवाद न स्थिर मतवाद है और न स्थिर काव्य रूप। उसमें निरंतर विकास हुआ है। आज प्रगतिशीलता के व्यापक अर्थ में ऐतिहासिक चेतना, जीवन

विवेक जीवनानुभवों का विस्तार, यथार्थ के मूल रूपों की समझ, जीवनधर्मी सौंदर्यबोध, प्रकृतिबोध का उल्लेख किया जाता है, फिर भी जीवन को देखने की यथार्थवादी दृष्टि विशेष अर्थ में मार्क्सवादी दृष्टि को यहाँ प्रमुखता प्राप्त है। प्रगतिवाद के महत्वपूर्ण कवियों में नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह, गजानन माधव मुक्तिबोध आदि का नाम उल्लेखनीय हैं।

प्रगतिवाद की अन्तर्वस्तु

प्रगतिवाद की अन्तर्वस्तु में जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण सबसे प्रमुख है। प्रगतिवादी कवि मानवीय संबंधों में समानता के पक्षधर रहे हैं। अपने सामाजिक यथार्थ के प्रति लगाव रखने के साथ-साथ वे भविष्य के प्रति भी आशावान हैं। प्रगतिवाद की अंतर्चेतना में निम्नलिखित विशेषताएँ उजागर होती हैं–

ऐतिहासिक चेतना

प्रगतिवाद की अंतर्वस्तु में ऐतिहासिक चेतना अर्थात अपने समय की, अपने युग की समझ बहुत महत्वपूर्ण है। प्रगतिवाद कवि को कालातीत होने की छूट नहीं देता। प्रगतिवाद में कविता और राजनीति का जो घनिष्ठ संबंध दिखाई देता है, वह इसी चेतना का परिणाम है। नागार्जुन की कविता 'शासन की बंदूक' इसका स्पष्ट उदाहरण है।

सामाजिक यथार्थ-दृष्टि

प्रगतिवादी विचारधारा के कवि जीवन से जुड़कर अपने विचारों की अभिव्यक्ति करते हैं। इन कवियों के पास एक वर्ग चेतन प्रधान दृष्टि है, जो सामाजिक विषमता के यथार्थ को कविता के रूप में ढाल देती है। नागार्जुन की कविताओं में ऐसे विषम यथार्थ को भोगते हुए व्यक्ति की वेदना व्यक्त हुई है।

प्रगतिवादी काव्य के यथार्थबोध की शक्ति उसकी बहु-रूपात्मक विविधता में निहित है।

परिवेश और प्रकृति के प्रति लगाव

प्रगतिवादी कवि प्रकृति में एक जीवन सक्रियता का आभास पाता है और प्रकृति से यह जुड़ाव उसके स्थानीय लगाव के कारण है। प्रगतिवादी कवि के यहाँ प्रकृतिबोध भी यथार्थ-बोध, सामाजिक वास्तविकता के अनुभव से अलग नहीं है। उदाहरणतः, नागार्जुन की कविता में धूप एक तीखे यथार्थ को सामने लाती है–

पूस-मास की धूप सुहावन
घिसे हुए पीतल-सी पांडुर

प्रकृति की सुनहरी और सुहावनी धूप यहाँ गरीबी का दुखद चित्र प्रस्तुत करती है।

जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण

प्रगतिशील कवि को जीवन की स्वीकृति के कवि कह सकते हैं। जीवनधर्मी लगाव एवं सकारात्मक दृष्टिकोण प्रगतिवाद की महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं। प्रगतिवादी कवि कठिन अंधकार और भयानक निराशा में भी सकारात्मक दृष्टिकोण को जीवित रखता है। गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की कविताएं अंधकार, संकट, निराशा और भय के बावजूद सार्थक भविष्य की आकांक्षा अभिव्यक्ति प्राप्त करती है।

मानवीय संबंधों में समानता

प्रगतिवादी कवि मानवता की शक्ति में विश्वास रखते हैं। ये कवि कविताओं के माध्यम से मानवतवादी स्वर बिखेरते हैं। वे मानव को जाति-पाति, वर्ग-भेद, अर्थ-भेद से मुक्त करके एक समान मंच पर देखना चाहते हैं। मानवीय संबंधों में समानता उसके लिए आदर्श है।

भविष्योन्मुखी दृष्टि

प्रगतिवादी कवि सामाजिक परिवर्तन के पक्ष में हैं। वे यथास्थितिवादी नहीं है। उनकी परिवर्तन की कल्पना अराजक नहीं है। वे वांछित दिशा में ही परिवर्तन का प्रयत्न करते हैं। यह परिवर्तन भविष्योन्मुखी दृष्टि के अभाव में संभव नहीं है। इसी दृष्टि के कारण उनकी कविता में साहसपूर्ण स्वर दिखाई देते हैं।

प्रगतिवाद का अभिव्यंजना शिल्प

रूप या शिल्प

प्रगतिवाद का जन-आंदोलन से सीधा संबंध था, इसलिए इससे जुड़े साहित्य का भी जनसुलभ होना अनिवार्य था। प्रगतिवादी कवियों ने साधारण रूप से असाधारण काम लिया है। उन्होंने वस्तु या कथ्य को महत्व देने के साथ-साथ अभिव्यंजना शिल्प का भी विकास किया है। नागार्जुन की कविताओं में काव्य-रूपों की आश्चर्यजनक विविधता दिखाई देती है। केदारनाथ अग्रवाल ने गीतों और सुगठित चित्रों में अपने काव्य-विवेक का परिचय दिया है। त्रिलोचन, मुक्तिबोध और शमशेर की कविताओं में विविध काव्यरूप दृष्टिगोचर होते हैं। प्रगतिवादी कवियों ने लोक-काव्य के रूपों का भी प्रयोग किया है। रूपगत परिष्कार प्रगतिवादी कवियों का लक्ष्य नहीं था। उन्होंने कविता के उसी रूप और शिल्प पर बल दिया, जो उनके कथ्य के संप्रेषण में सहायक बने।

भाषा : काव्य भाषा (अलंकार, बिम्ब, प्रतीक)

प्रगतिवादी कवियों के लिए काव्य भाषा का प्रमुख गुण उसकी संप्रेषणीयता है। उनकी काव्य भाषा इस परिपाटी पर पूर्ण रूप से खरी उतरती है। उनकी काव्य भाषा में अलंकार, बिम्ब, प्रतीक सभी उपस्थित हैं, पर वे बाहरी अलंकरण के रूप में न होकर भाषा की क्षमता और सरलता के परिचायक रूप में विद्यमान हैं। प्रगतिवादी कवियों की भाषा सार्थक वहाँ है, जहाँ वह 'जीवन की हलचल' से संपन्न है, जैसे–

मेंहदी की अरधान उड़ी। देखा, फिर ठहरा,
कपिश गहगहे विमल फूल खिलखिला रहे हैं
पिला रहे हैं
अमृत घ्राण को।

मूर्तिविधान : ऐतिहासिक मूर्त्तता

छायावादी कवियों ने भी भाषा की मूर्तिमत्ता पर बहुत बल दिया, किंतु उसमें रूमानियत और कल्पना का पुट विद्यमान रहा। प्रगतिवादी कवियों में यह मूर्त्तता ऐतिहासिक चेतना के फलस्वरूप ही प्रकट हुई है। इसमें यथार्थ दृष्टि को विशिष्ट महत्व दिया गया है। प्रगतिवादी कवियों के प्रतीक भी एक निश्चित विचारधारा या दृष्टि के अधीन ही सार्थकता प्रदान करते हैं। लगभग सभी प्रगतिवादी कवियों ने अपनी कविताओं में सामाजिक यथार्थ के मूर्त्त चित्र उपस्थित किये हैं।

छन्द-लय

किसी भी काव्य की भाषा में प्रयुक्त विविध काव्य रूपों के प्रयोग से ही उसकी क्षमता का आकलन होता है। छन्द और लय भी काव्य रूप के महत्वपूर्ण अंग हैं। प्रगतिवादी कवियों ने छन्दों का प्रयोग बहुतायत के साथ किया है। उन्होंने लोक और साहित्यिक दोनों प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है। दोहा, बरवै, ग़ज़ल, आल्हा लावनी से अलग भी लय का विन्यास प्रगतिवादी कविता में परिलक्षित होता है।

www.neerajbooks.com

प्रगतिवाद के प्रमुख कवि

नागार्जुन

प्रगतिवादी काव्यधारा के प्रमुख कवियों में नागार्जुन का महत्वपूर्ण स्थान है। नागार्जुन को मैथिली काव्य रचनाओं के लिए साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित भी किया गया है। खड़ी बोली को हिंदी कविताओं में भी नागार्जुन काव्य ऊर्जा, गहरी आंचलिकता, ठेठपन, व्यंग्यपूर्ण आक्रमकता और गहरी जीवनासक्ति का प्रमाण देते हैं। राजनीतिक कविताएँ नागार्जुन की विशेषता रही हैं और उनकी कवि-प्रतिभा का प्रमाण देती है। जीवन के प्रति प्रगाढ़ राग की कविताएँ भी नागार्जुन के यहाँ देखने को मिलती हैं। कविता की अंतर्वस्तु, रूप और भाषा पर नागार्जुन का अनोखा नियंत्रण दिखाई देता है।

नागार्जुन को आधुनिक कबीर भी कहा जाता है। उनका फक्कड़ क्रांतिकारी व्यक्तित्व उनकी कविताओं में बिखरा पड़ा है।

केदारनाथ अग्रवाल

प्रगतिवादी काव्यधारा के एक अन्य प्रतिनिधि और महत्वपूर्ण कवि के रूप में केदारनाथ अग्रवाल का नाम उल्लेखनीय है। रूमानी आदर्शवाद से लेकर यथार्थवाद तक, रूपासक्ति से लेकर जीवनासक्ति तक और कोमल रागात्मकता से लेकर खुरदरे वस्तुचित्रण तक केदारनाथ की कविता में अनेक रंग देखने को मिलते हैं। प्रेम, सौंदर्य और प्रकृति के गहरे लगाव के साथ केदारनाथ संघर्षशील जनता के कठोर जीवन, कठिन श्रम और दृढ़ आस्था के प्रति सजग रहे हैं। 'चन्द्र गहना से लौटती बेर' और 'बसंती हवा' उनकी प्रमुख कविताएँ है। 'देवली के नरसंहार' जैसी तात्कालिक घटनाओं पर भी केदारनाथ ने कविताएँ लिखकर अपनी नयी जीवन दृष्टि और वर्ग चेतना का प्रमाण दिया है।

शमशेर बहादुर सिंह

कुछ आलोचकों ने शमशेर को प्रगतिवादी काव्यधारा से सम्बद्ध न करते हुए उन्हें प्रयोगशील या रूपवादी माना है, परंतु उनकी यह धारणा भ्रामक ही है, क्योंकि शमशेर विचारधारा की दृष्टि से मार्क्सवादी हैं। जनता के प्रति उनकी सहानुभूति किसी से कम नहीं है, पर कविता को वे उसकी मुक्त संभावनाओं में देखते हैं। रूप और शिल्प उन्हें जीवन की सच्चाइयों की तरह ही जरूरी लगते हैं। 'लेकर सीधा नारा' उनकी प्रसिद्ध कविता है, जो प्रगतिवादी आंदोलन में बहुत चर्चित रही।

गजानन माधव 'मुक्तिबोध'

मुक्तिबोध प्रगतिशील यथार्थवादी काव्यधारा के ऐसे महत्वपूर्ण कवि हैं, जो यह मानते हैं कि एक कला सिद्धांत के पीछे एक विशेष जीवन दृष्टि, एक विशेष जीवन दर्शन और एक विशेष राजनैतिक दृष्टि होती है। मुक्तिबोध की महत्वपूर्ण लंबी कविताएँ राजनैतिक दृष्टि से परिपूर्ण हैं। उनकी यह राजनैतिक दृष्टि मार्क्सवादी विचारधारा की देन है, जो अपने व्यापक अर्थ में विश्वदृष्टि भी कही जा सकती है। मुक्तिबोध ने यथार्थ चित्रण के लिए फैंटेसी का भी प्रयोग किया और इस प्रकार एकरस लगने वाले काव्य रूप में विविधता, नाटकीयता और गति पैदा की।

त्रिलोचन

प्रगतिवादी काव्यधारा में त्रिलोचन अपना एक अलग स्थान रखते हैं। उन्हें तुलसी और निराला की परंपरा को आगे बढ़ाने वाले कवि के रूप में भी पहचाना जाता है। उन्होंने राजनीतिक विषयों पर कविताएँ नहीं लिखीं, पर जीवन के साधारण विषयों, मामूली प्रसंगों पर लिखते हुए वे अपनी दृष्टि का प्रमाण देते हैं। कृत्रिमता, बनावटीपन से मुक्त सहज आत्मीयता त्रिलोचन की विशिष्टता है।

प्रगतिवाद का महत्व

ऐतिहासिक महत्व–प्रगतिवाद अपनी ऐतिहासिक भूमिका के लिए साहित्य में स्थायी महत्व का विषय हो गया है। प्रगतिवाद ने कविता को अतिशय सूक्ष्मता और अतिशय कल्पनाशीलता से निकालकर अपने समय के यथार्थ से जोड़ा। प्रगतिवाद ने एक नये संदर्भ में कविता को समसामयिक जिम्मेदारी से जोड़ते हुए नये आयामों की सरंचना की है।

साहित्यिक महत्व

प्रगतिवाद ने कविता की अंतर्वस्तु और रचनाविधान में क्रांतिकारी परिवर्तन किये हैं। इस कविता में उपेक्षित विषयों और चरित्रों को काव्यात्मक प्रतिष्ठा मिली है। इस रूप में प्रगतिवादी काव्यधारा ने साहित्य भूमि को विस्तार के नये क्षेत्र उपलब्ध कराये हैं।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. प्रगतिवाद एक...............

(क) प्रवृत्ति है

(ख) आंदोलन है

उत्तर–(ख) आंदोलन है।

प्रश्न 2. प्रगतिवादी साहित्यिक आंदोलन............

(क) विदेशी विचारधारा का प्रतिफलन है।

(ख) युगीन परिस्थितियों की देन है।

उत्तर–(ख) युगीन परिस्थितियों की देन है।

प्रश्न 3. प्रगतिवाद किसे कहते है?

उत्तर–'प्रगतिवाद' से अभिप्राय उस साहित्यिक प्रवृत्ति से है, जिसमें एक प्रकार की इतिहास चेतना, सामाजिक इतिहास दृष्टि, वर्ग चेतन विधारधारा, प्रतिबद्धता या पक्षधरता, गहरी जीवनासक्ति, परिवर्तन के लिए सजगता और एक प्रकार की भविष्योन्मुखी दृष्टि मौजूद हो। 'प्रगतिवाद' केवल काव्य प्रवृत्ति नहीं, अपितु व्यापक काव्यान्दोलन या साहित्यिक आंदोलन है, जिसके परिप्रेक्ष्य में मार्क्सवादी विचारधारा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जो राजनीतिक दृष्टि से आगे विश्वदृष्टि के रूप में भी काफी महत्व रखती है। प्रगतिवाद या प्रगतिशील साहित्य शब्द का प्रयोग 1936 के आसपास हुआ, जब प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हो चुकी थी। इस प्रकार 1936 ई. के बाद हिंदी साहित्य में सामाजिक चेतना को केंद्र में रखने वाली जिस नई काव्यधारा का उदय हुआ, उसे ही प्रगतिवाद कहा गया। प्रगतिवाद एक अर्थ में छायावाद का विकास है और दूसरे अर्थ में छायावाद के विरुद्ध विकसित काव्य प्रवृत्ति। यह साहित्य में स्वस्थ सामाजिकता, व्यापक भावभूमि और उच्च विचार के निरंतर विकास का इतिहास है, जो न केवल राजनीतिक जागरण से आरंभ होकर क्रमश: जीवन की व्यापक समस्याओं की ओर, आदर्शवाद से आरंभ होकर क्रमश: यथार्थवाद की ओर तथा यथार्थवाद से आरंभ होकर क्रमश: स्वस्थ सामाजिक यथार्थवाद की ओर अग्रसर होता जा रहा है। अत: व्यापक अर्थों में प्रगतिवाद न तो स्थिर मतवाद है और न ही स्थिर काव्य रूप। वह निरंतर विकास प्रक्रिया है, जिसमें जीवन को देखने की यथार्थवादी दृष्टि और विशेष अर्थों में मार्क्सवादी दृष्टि

www.neerajbooks.com

को प्रमुखता प्राप्त है। आज प्रगतिवाद या प्रगतिशीलता के व्यापक अर्थ में ऐतिहासिक चेतना, जीवन विवेक, जीवनानुभवों के विस्तार, जीवनधर्मी सौंदर्यबोध का उल्लेख किया जाता है। प्रगतिवाद नाम से परिचित काव्य प्रवृत्ति के महत्वपूर्ण कवियों में नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह, गजानन माधव 'मुक्तिबोध', त्रिलोचन आदि उल्लेखनीय हैं। मार्क्सवाद में इन सभी की आस्था जहाँ व्यापक जीवन ज्ञान में और गहरी जीवनासक्ति में सहायक हुई है, वहीं वे प्रगतिवाद को समर्थ काव्य प्रवृत्ति के रूप में विकसित करने के लिए यथार्थ के नये रूपों की समझ के अनुरूप, नयी काव्य-शैली का विकास भी करते रहे। प्रगतिवाद के विकास में अपना योगदान देने वाले परवर्ती कवियों में केदारनाथ सिंह, धूमिल, कुमार विमल, अरुण कमल, राजेश जोशी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

प्रश्न 4. कोष्ठकों में दिये गये शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरा करें।

(क) प्रगतिवादी काव्य की अंतर्वस्तु में.....................चेतना महत्वपूर्ण है। (वैयक्तिक/दार्शनिक/ऐतिहासिक)

(ख) प्रगतिवादी काव्य दृष्टि........................दृष्टि है। (व्यक्ति चेतना प्रधान/वर्ग चेतना प्रधान/वर्गहीन)

(ग) प्रगतिवादी कवि का प्रकृतिबोध............से अनुप्राणित है। (वैयक्तिक यथार्थ बोध/सामाजिक यथार्थ बोध)

(घ) प्रगतिवादी कवि................मानववादी हैं। (सर्वथा/विवेकपूर्ण)

(च) प्रगतिवादी कवि......................हैं। (यथार्थवादी/यथास्थितिवादी)

उत्तर–(क) ऐतिहासिक, (ख) वर्गचेतना प्रधान, (ग) सामाजिक यथार्थ बोध, (घ) विवेकपूर्वक, (च) यथार्थवादी।

प्रश्न 5. कोष्ठकों में दिये गये शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरा करें–

(क) रूपगत................प्रगतिवादी कवियों का लक्ष्य नहीं है। (विकास/परिष्कार)

(ख) प्रगतिवादी काव्यभाषा का आदर्श गुण है..............। (साधारणता/संप्रेषणीयता)

(ग) प्रगतिवादी काव्य रूप में मूर्त्तता ....चेतना का फल है। (वैयक्तिक/ऐतिहासिक)

(घ) प्रगतिवादी कवियों ने काव्य-लय को ....दी है। (एकरसता/विविधता)

उत्तर–(क) परिष्कार, (ख) संप्रेषणीयता, (ग) ऐतिहासिक, (घ) विविधता।

प्रश्न 6. कोष्ठकों में दिये गये शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरा करें।

(क) जीवन के प्रति प्रगाढ़................की कविताएँ नागार्जुन के यहाँ कम नहीं हैं। (भाव/राग)

(ख) भावुकता केदार के यहाँ ....का पयार्य है। (सरलता/आत्मीयता)

(ग) शमशेर विचारधारा की दृष्टि से ....है। (भाववादी/मार्क्सवादी)

(घ) मुक्तिबोध की लम्बी कविताएँ ....दृष्टि से वंचित नहीं हैं। (सांस्कृतिक/राजनीतिक)

(च) त्रिलोचन का अपना आविष्कार है ....। (प्रगीत/सानेट)

उत्तर–(क) राग, (ख) आत्मीयता, (ग) मार्क्सवादी, (घ) राजनीतिक, (च) सानेट।

प्रश्न 7. कोष्ठकों में दिये गये शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरा करें–

(क) प्रगतिवाद की ऐतिहासिक.....................है। (भूमिका/अवधारणा)

(ख) प्रगतिवाद ने .... का विस्तार किया। (साहित्य बोध/साहित्यभूमि)

उत्तर–(क) भूमिका, (ख) साहित्यभूमि।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. प्रगतिवाद की किस व्यापक आंदोलन से तुलना की गयी है?

उत्तर–जो विचारधारा राजनीतिक क्षेत्र में समाजवाद और दर्शन में द्वंद्वात्मक भौतिकवाद है, वही साहित्यिक क्षेत्र में प्रगतिवाद के नाम से अभिहित की जाती है। मार्क्सवादी या साम्यवादी दृष्टिकोण के अनुसार निर्मित काव्यधारा प्रगतिवाद है। 1936 का वर्ष हिंदी साहित्य के इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण वर्ष है। इस समय जहाँ एक ओर छायावाद अपने पूर्ण उत्कर्ष पर दिखाई देता है, वहाँ साथ-साथ इसका ह्रास भी दिखाई देने लगता है। छायावाद की कविता मन की गुफा से बाहर निकलकर अपना यथार्थपरक सामाजिक उत्तरदायित्व महसूस कर रही थी। 1929 में निराला ने 'परिमल' की भूमिका में निराला ने कविता की मुक्ति को मनुष्य की मुक्ति के प्रश्न से जोड़ा। पंत ने भी स्वीकार किया कि छायावाद में युग को वाणी देने की शक्ति नहीं रह गई थी। 'ग्राम्या', 'युग वाणी' के पीछे नये यथार्थ की चेतना स्पष्ट दिखाई देने लगी थी। अत: कविता की अंतर्वस्तु और रचनाविधान में परिवर्तन करके वैयक्तिक या रहस्यात्मक रूमानी वृत्ति को त्यागकर छायावादी कवियों ने ही प्रगतिवाद का रास्ता तैयार कर दिया था। इस प्रकार प्रगतिवाद केवल काव्य प्रवृत्ति नहीं, बल्कि व्यापक साहित्यिक आंदोलन है, जो 1930 के आसपास घटने वाली वैश्विक घटनाओं और भारतीय स्वाधीनता आंदोलनों का परिणाम है। भारतीय समाज में हो रहे सक्रिय बदलाव और युगीन परिस्थितियों के कारण वर्ग चेतना और वर्ग संघर्ष की जो भावना पैदा हुई, यही भावना प्रगतिवाद की यथार्थ दृष्टि का प्रेरक तत्व बनी और साहित्य में प्रगतिवाद के विकास का आधार भी। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने प्रगतिवाद की व्यापकता पर विशेष बल देते हुए प्रगतिवाद को केवल भक्ति आंदोलन से तुलनीय बताया है। जिस प्रकार भक्ति आंदोलन ने पूरे भारतीय जनमानस में एक नवीन चेतना का संचार कर विपरीत परिस्थितियों में जीवनयापन के लिए एक सुदृढ़ भूमि प्रदान की, उसी प्रकार प्रगतिवादी आंदोलन ने भी वर्षों की गुलामी और दासता से पीड़ित जनमानस की व्यथा की पीड़ा को आधार बनाकर काव्य रचना की। उन्होंने शोषण के खिलाफ आम आदमी की आवाज को बुलंद कर उसमें नई जीवन शक्ति का संचार किया। यही कारण है कि प्रगतिवादी आंदोलन कभी स्थगित नहीं हुआ। आज भी जो नयी कविता लिखी जा रही है, वह प्रगतिवाद का विकास ही कही जा सकती है।

प्रश्न 2. किस अर्थ में प्रगतिवाद का चरित्र अखिल भारतीय है?

उत्तर–आधुनिक युग से पहले हिंदी साहित्य में वीर, भक्ति और श्रृंगार से संबंधित कविताएँ लिखी जाती थीं, लेकिन आधुनिक युग में मनुष्य के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और वैयक्तिक अनुभवों पर भी काव्य रचना होने लगी। यही नहीं उसके अनुभव संसार में आने

Neeraj Publications www.neerajbooks.com